ॐ स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता ॐ

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 2; Number : 05
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

''सा विद्या या विमुक्तये'' शिक्षा के संदर्भ में मुक्ति का प्रथम अर्थ है–अज्ञान से मुक्ति। मुक्ति का दूसरा संदर्भ होगा संवेगों के अतिरेक से मुक्ति। आदमी में संवेग का अतिरेक होता है और वह आदमी को पकड़ लेता है, आसानी से नहीं छूटता। जब तक व्यक्ति वीतराग अवस्था को प्राप्त नहीं हो जाता तब तक वह संवेगों से पूर्णरूपेण छुटकारा नहीं पा सकता। संवेगों के अतिरेक के कारण आदमी न परिवार में, न समाज में और न गांव में फिट हो सकता है। वह दूसरों के लिये सिरदर्द बन जाता है। ऐसी स्थिति में यह स्वयं प्राप्त होता है कि शिक्षा उसे संवेग के अतिरेक से मुक्ति दिलाए। इसका अर्थ है कि मनुष्य में संवेगों पर नियंत्रण करने की क्षमता बढ़े जिससे कि संवेगों की प्रचुरता न रहे। वे एक सीमा में आ जाये। मुक्ति का तीसरा संदर्भ है – संवेदों के अतिरेक से मुक्ति। इन्द्रियों की जो संवेदनाएं हैं, उनका अतिरेक भी समस्याएं पैदा करता है और समाज में अनेक उलझनें उत्पन्न करता है। शिक्षा का यह महत्त्वपूर्ण कार्य है कि वह संवेदनाओं के अतिरेक से व्यक्ति को मुक्ति दिलाए। मुक्ति का चौथा संदर्भ है – धारणा और संस्कार से मुक्ति। व्यक्ति धारणाओं और अर्जित संस्कारों के कारण दुःख पाता है। शिक्षा का कार्य है कि वह इनसे मुक्ति दिलाए। मुक्ति का पांचवा संदर्भ है – निषेधात्मक भावों से मुक्ति। व्यक्ति का नेगेटिव एटिट्यूड समस्या पैदा करता है। इससे मुक्त होना भी बहुत आवश्यक है।

उपरोक्त पांचों संदर्भों में मुक्ति को देखने पर **सा विद्या या विमुक्तये** का सूत्र बहुत स्पष्ट हो जाता है। वास्तव में विद्या वही होती है जो मुक्ति के लिये होती है, जिससे मुक्ति सधती है। हम कसौटी करें और देखें कि क्या आज की शिक्षा से ये पांचों संदर्भ सधते हैं? क्या वास्तव में अज्ञान से मुक्ति मिलती है?

''आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में'' जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2011 का शुभारम्भ

राजसमन्द 13 मई 2011। आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें जन्म दिवस के असवर पर वर्ष भर आयोजित होने वाले 'आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य' में जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा ''जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2011'' का शुभारम्भ किया गया। आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रथम पट्टोत्सव के अवसर पर प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुए जैन विश्व भारती, लाडनूँ के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया एवं जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक डॉ. सूरजमल सुराणा ने पूज्यप्रवर को प्रतियोगिता प्रश्नोत्तरी एवं आधार पुस्तकों का सेट उपहृत किया। इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित ''आओ हम जीना सीखें'', साध्वी सुमतिप्रभाजी की पुस्तक 'आचार्य महाश्रमण : जीवन परिचय'' एवं मुनि किशनलालजी की पुस्तक **क्रमशः...**

➔प्रश्नोत्तरी जमा करवाने की अन्तिम तिथि – 30.09.2011
➔पुरस्कार – प्रथम 5000/– द्वितीय – 4000/– तृतीय 3000/– एवं सात सान्त्वना पुरस्कार –1000/– प्रत्येक।
➔आयु एवं लिंग बंधन नहीं, कोई भी भाग ले सकता है।

उन्नत विचार, उत्कृष्ट व्यक्तित्व के धनी समाज सुधारक संत आचार्य महाश्रमण : राष्ट्रपति

कांकरोली 12 मई, 11। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण के 50वें जन्मवर्ष को ''अमृत महोत्सव'' के रूप में मनाने हेतु आयोजित समारोह का प्रारम्भ ब्रह्ममुहूर्त्त में शंखनाद एवं 'संघ पुरुष चिरायु हो' के गगनभेदी घोष के साथ कांकरोली की पवित्र धरा पर हुआ। इस अवसर पर आयोजित मुख्य समारोह में धर्मसभा को संबोधित करते

हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म रम जाता है उसे मनुष्य तो क्या देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म के तीन प्रकार हैं–संयम धर्म, अहिंसा धर्म एवं तपस्या धर्म। उन्होंने आगे कहा कि जो मनुष्य अपने जीवन में वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है, उसे लोग आदर के भाव से देखते हैं। सत्य की आराधना को भगवान की आराधना बताते हुए उन्होंने देश के विकास हेतु आर्थिक, भौतिक और नैतिक उत्थान के साथ–साथ आध्यात्मिक उत्थान को जरूरी बताया। इस अवसर पर पूरा पण्डाल दर्शनार्थियों से खचाखच भरा हुआ था।

देश की प्रथम नागरिक महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने पूज्यप्रवर को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण एक महान विचारक, महान व्यक्तित्व व समाज सुधारक हैं। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये जागृति लाने का कार्य किया है। ऐसे संत के द्वारा ही समाज में अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार व अनेक कुप्रथाओं को दूर किया जा सकता है। **क्रमशः ...2**

क्रमशः...''जीवन विज्ञान एक परिचय'' के आधार पर तैयार की गई प्रश्नोत्तरी को प्रतिभागी अपने घर बैठे हल करके जीवन विज्ञान अकादमी को प्रेषित कर सकेंगे। प्रश्नोत्तरी में दस प्रकार के कुल 125 प्रश्न हैं। प्रश्नोत्तरी हल करके भेजने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2011 तथा प्रतियोगिता का प्रवेश शुल्क रुपये 100 रखा गया है। यह प्रतियोगिता श्रद्धा की प्रतिमूर्ति प्रेक्षा प्रशिक्षिका स्व. शान्ताबाई सिंघवी की पुण्य स्मृति में 'शान्ताबाई माणकराज सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट, वंदवासी, चैन्नई' द्वारा प्रायोजित है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने भी इस प्रतियोगिता के व्यापक प्रचार–प्रसार का दायित्व ग्रहण किया है।

संकल्प बनाम कल्पवृक्ष

संकल्प शब्द में 'कल्प' छुपा है। भारतीय साहित्य में कल्पवृक्ष, कामधेनु, कामकुंभ आदि शब्दों से यह अभिव्यक्त होता है कि व्यक्ति द्वारा की गई कल्पना अथवा धारणा दृढ़ इच्छा शक्ति यानि संकल्प से पूरी होती है। संकल्प सफलता का स्वर्णिम सूत्र है। किसी ध्येय और वस्तु को प्राप्त करने की कामना इच्छा है। इच्छा जब धनीभूत होती है तब दृढ़ निश्चय (संकल्प) का रूप ले लेती है। संकल्प का निश्चय ही प्रतिज्ञा है, प्रतिज्ञा का दूसरा अर्थ व्रत है। व्रत के दो रूप हैं––एक अणुव्रत, दूसरा महाव्रत। अणुव्रत का अर्थ है––छोटे–छोटे संकल्प जो देश काल और मर्यादा से नियोजित होते हैं। महाव्रत का अर्थ है––संपूर्ण व्रत। जो तीन का योग––मन, वचन और काया द्वारा और तीन करण, करना, करवाना और अनुमोदन से नियोजित है। संकल्प सद् भी होता है असद् भी होता है। सद् संकल्प जीवन का विकास करता है। असद् संकल्प जीवन का ह्रास करता है। जिस प्रकार का संकल्प किया जाये, उसका चित्र मानस पटल पर स्पष्ट होना चाहिए ताकि वह साकार हो सके। आधे, अधूरे मन और संकल्प से काम पूरा नहीं होता है। संकल्प के प्रति संदेह, शंका करने वाला अपने जीवन में सफल नहीं हो पाता है इसलिए जो संकल्प करो, उसकी तस्वीर बनाओ, उसे पूर्ण होने तक मानस चक्षुओं से देखने की कोशिश करो।

कैसे करें संकल्प : संकल्प करने से पहले अपने आप को तैयार करें। स्थिर आसन हो, श्वास भीतर जाते समय पूरक पूर्वक श्वास को रोकें और संकल्प का चित्र बनाये जैसे ''मैं परीक्षा में श्रेष्ठ नम्बरों से उत्तीर्ण हुआ हूं। प्रिंसीपल महोदय मुझे प्रमाण पत्र दे रहे हैं। सारे विद्यार्थी हाथ की मुद्रा से फूलों की वर्षा कर रहे हैं।''

क्रमशः ...2 साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी व मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी ने अन्य सहवर्ती साध्वियों के साथ गुरुवर के जन्मदिवस पर अभ्यर्थना की। श्रमण–श्रमणीवृन्द, समण–समणीवृन्द व मुमुक्षु बहनों ने पूज्यवर की वंदना की। साध्वियों द्वारा 'धन्य जयंति, ज्योति चरण' की प्रस्तुति दी गई। मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी द्वारा गुरुवर का मुक्तकंठ से यशोगान किया गया। मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री राजेन्द्रकुमार, मुनिश्री जितेन्द्रकुमार, अभातेयुप कोषाध्यक्ष सलिल लोढ़ा, कन्या मंडल संयोजिका केसर जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। मुनिश्री महावीर ने 'देवकुमार जैसा दिव्य रूप तेरा' गीतिका की मधुर प्रस्तुत दी। मुनिश्री दिनेशकुमार द्वारा रचित गीत का सभी साधुओं ने सहगान किया।

इस अवसर पर भारत गणराज्य की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, राजस्थान व पंजाब के राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल, केन्द्रीय मंत्री डॉ.सी.पी.जोशी सहित तेरापंथ समाज की सभी संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिक्षा का अभिनव अभियान।
विकसित है जीवन विज्ञान।। आचार्य महाप्रज्ञ

संयुक्त निदेशक की नियुक्ति

श्री ओमप्रकाश सारस्वत, चुरू को दिनांक 16 मई, 2011 से जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ में संयुक्त निदेशक पद पर नियुक्ति प्रदान की गई। श्री सारस्वत ने इसी दिन कार्यभार ग्रहण किया।

जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2010 पुरस्कार वितरण समारोह

राजसमन्द 13 मई 2011। जीवन विज्ञान प्रणेता युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ को 'महाप्रज्ञ' अलंकरण के उपलक्ष में जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा आयोजित 'जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2010' का पुरस्कार वितरण समारोह आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रथम पट्टोत्सव के अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में गांधी सेवा सदन, राजसमन्द में आयोजित किया गया। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने बताया कि प्रतियोगिता के माध्यम से जीवन विज्ञान साहित्य के अध्ययन द्वारा संस्कारों का निर्माण करना प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य है। यह प्रतियोगिता प्रतिवर्ष श्रद्धा की प्रतिमूर्ति प्रेक्षा प्रशिक्षिका स्व. शान्ताबाई सिंघवी की पुण्य स्मृति में 'शान्ताबाई माणकराज सिंघवी चेरीटेबल ट्रस्ट, वंदवासी, चैन्नई' के प्रायोजकत्व में जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ द्वारा आयोजित की जाती है। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित इस प्रतियोगिता में लगभग 2000 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें से 1190 प्रतिभागियों से प्राप्त प्रश्नोत्तरी की जांच पश्चात लॉटरी द्वारा क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय हेतु एक–एक तथा सांत्वना पुरस्कार हेतु सात प्रतिभागियों का चयन किया गया था। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया, जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक डॉ. सूरजमल सुराणा, जी.वि. अकादमी मुम्बई के पूर्व अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल तातेड़ ने प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार राशि, प्रमाण–पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के नाम इस प्रकार हैं– अंकुर बरड़िया,सरदारशहर; सुश्री आयुषी जैन, बालोतरा; सुश्री गुणवती मालू सुजानगढ़ (क्रमशः प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय) तथा मुमुक्षु सुनिता चिण्डालिया, लाडनूँ,, ऋषभकुमार संचेती सरदारशहर, श्रीमती सुमन कोठारी, मुम्बई, श्रीमती राजू देवी छाजेड़ सरदारशहर, गौतम शर्मा लाडनूँ,; सुश्री ज्योति राठौड़, सुश्री खुशबू गिड़िया बीदासर (सात सांत्वना)। कार्यक्रम का संचालन हनुमान मल शर्मा ने किया।

जीवन विज्ञान अकादमी कोलकाता के बढ़ते चरण

जीवन विज्ञान अकादमी, कोलकाता के कुशल एवं जुझारू प्रशिक्षक विक्रमसिंह सेठिया तन, मन एवं धन से जीवन विज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने में लगे हुए हैं। श्री सेठिया द्वारा वर्ष 2011 में आयोजित जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम/सेमिनारों का विवरण इस प्रकार है। जी.वि. प्रभारी प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी एवं जी. वि.अ.लाडनूँ की ओर से आपको बहुत बहुत साधुवाद।

क्र.सं.	संस्था/विद्यालय का नाम	कार्यक्रम दिनांक
1.	बेहरामपुर महिला मण्डल, मुर्शिदाबाद, बेहरामपुर (प.बं.)	29.01.2011
2.	कोलकाता कन्या मंडल, कोलकाता	05.02.2011
3.	ग्रीन वुड स्कूल, रिजेन्ट पार्क, टौलीगंज, कोलकाता–40	06.02.2011
4.	राज.उ.माध्यमिक विद्यालय, लाछड़सर (रतनगढ़–चुरू)	11.02.2011
5.	ब्लुमिंग बड्स, ब्रह्मपुर, गरिया, कोलकाता–96	20.02.2011
6.	विद्यानिकेतन हाई स्कूल,विवेकानन्द पार्क रोड़, बंसद्रोनी, कोलकाता–70	25.02.2011
7.	सेन्ट जॉर्ज स्कूल, मोहिमपुर बाजार, कोलकाता	02.03.2011

पाठकों से विनम्र अनुरोध – समस्त सुधी पाठकों एवं संस्थाओं से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने मूल्यवान सुझाव समय–समय पर हमें भेजकर लाभान्वित करें एवं अपने क्षेत्रों में आयोजित जीवन विज्ञान शिविरों एवं गतिविधियों की समुचित रिपोर्ट और फोटो जीवन विज्ञान : ई–न्यूजलेटर के आगामी अंकों में प्रकाशनार्थ भेजें। संपादक।